गद्यखंड

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. हामिद मिठाई या खिलौने के बदले चिमटे का चयन करता है क्यों?

उत्तर- हामिद चार-पाँच साल का नन्हा बालक है लेकिन अभावग्रस्त जीवन उसे परिपक्व बना दिया था। वह समझता था कि मिठाई या खिलौने से थोड़ी देर के लिए खुशी मिलेगी। उसे ख्याल आता है कि उसकी दादी के पास चिमटा नहीं है, जिस कारण अक्सर उसके हाथ रोटी सेंकते वक्त जल जाते हैं। इसलिए हामिद अन्य बच्चों की तरह मिठाई या खिलौने न लेकर चिमटा खरीदता है।

2. ईद के दिन अमीना क्यों उदास थी?

उत्तर- अमीना एक गरीब महिला है। एक वर्ष पहले उसका बेटा बहु दोनों चल बसे थे। उसका सहारा उसका पोता हामिद था। साल भर का त्योहार ईद के दिन उसके घर अन्न का एक दाना नहीं था। तीन कोस दूर ईदगाह के मेले में जाने के लिए जूते भी नहीं थे। इसी बदहाली के कारण अमीना ईद के दिन उदास थी।

3. चिमटा देखकर अमीना के मन में कैसा भाव जगा?

उत्तर- हामिद के हाथ में चिमटा देखकर अमीना चौंक उठी।
उसकी समझ में नहीं आया कि इतने बड़े मेले में इसे और कोई
चीज नहीं मिली जो लोहे का विमा उठा लाया। अमीना क्रोधित हो जाती है कि यह कितना नासमझ लड़का है। लेकिन हामिद जब कहता है कि "तुम्हारी ऊँगलियाँ तबे से जल जाती थी,
इसलिए खरीदा, सुनते ही अमीना का क्रोध तुरंत स्नेह में बदल जाता है, अमीना की आँखें भर आती है।

4. मेला में जाने से पहले हामिद दादी से क्या कहता है?

उत्तर- मेला में जाने से पहले अमीना डर रही थी कि नन्हीं सी जान तीन- कोस चलेगा कैसे? कहीं खो जाए तो क्या होगा? इसलिए हामिद अपनी दादी अमीना को सांत्वना देता हैं। वह कहता है--"तुम डरना नहीं अम्मा, मैं सबसे पहले आऊँगा। बिल्कुल न डरना।"

5. हामिद कितने वर्ष का है? वह कहाँ सोता है?

उत्तर- हामिद चार-पाँच वर्ष का है। वह अपनी बूढ़ी दादी अमीना की गोद में सोता है।

Class 10 Notes, Model Paper, Objective & Subjective PDF, Question Bank के Mob. 8210423200 पर मैसेज करें

6. बालगोबिन भगत ने अपने बेटे की मृत्यु पर अपनी भावनाएँ किस तरह व्यक्त की ?

उत्तर- बालगोबिन भगत कबीरपंथी थे। वे अपने बेटे की मृत्यु पर विलाप नहीं करते बल्कि मग्न हो गीत गाए जा रहे थे। गाते-गाते पतोहू के नजदीक भी जाते और उसे रोने के बदले उत्सव मनाने को कहते। उनका कहना था— आत्मा-परमात्मा के पास चली गई, विरहिणी अपने प्रेमी से जा मिली, भला इससे बढ़कर आनंद की कौन बात? भगत का विश्वास मृत्यु पर विजय प्राप्त कर चुका था। वे पतोहू को यथार्थ का ज्ञान देकर अपनी भावनाएँ प्रकट कर रहे थे।

7. पुत्रवधु द्वारा पुत्र की मुखाग्नि दिलवाना भगत के व्यक्तित्व की किस विशेषता को दर्शाता है?

उत्तर- बालगोबिन भगत एक गृहस्थ संन्यासी थे। वे एक सच्चे कबीरपंथी थे जो राग मोह से ऊपर थे बेटे के मृत्यु पर वे विलाप नहीं करते बल्कि पतोहू से उत्सव मनाने को कहते हैं। पुत्रवधु द्वारा पुत्र की मुखाग्नि दिलवाना भगत के व्यक्तित्व की निर्लिप्तता का परिचायक है। यह कार्य भगत के व्यक्तित्व की सच्चाई और महानता को दर्शाता है।

8. बालगोबिन भगत कौन हैं?

उत्तर- बालगोबिन भगत मंझीले कद के गोरे चिट्टे आदमी थे। वे गृहस्थ होते हुए भी सच्चा साधु थे। बालगोबिन भगत कबीर को 'साहब' मानते थे, उन्हीं के गीतों को गाते, उन्हीं के आदर्शों पर चलते थे कभी झूठ नहीं बोलते खरा व्यवहार रखते थे। वे हर वर्ष तीस कोस पैदल यात्रा कर गंगा स्नान करने जाते थे। संत समाज में उनकी गहरी आस्था थी।

9. बालगोबिन भगत गृहस्थ थे। फिर भी उन्हें साधु क्यों कहा जाता था?

उत्तर- बालगोबिन भगत गृहस्थ ही थे, परंतु उनका स्वभाव और आचरण साधु का था। वे साधु की तरह लंबी दाढ़ी रखते, कम कपड़े पहनते, गले में तुलसी माला पहनते और मस्तक पर रामानंदी चंदन का टीका लगाते। बालगोबिन भगत कभी झूठ नहीं बोलते, साफ व्यवहार रखते और दो टूक बात करतेथे। बालगोबिन भगत की दिनचर्या, कर्त्तव्यनिष्ठा और आत्मज्ञान उन्हें गृहस्थ के साथ साधु बना दिया था।

10. हुंडरू का झरना कैसे बना है?

उत्तर- स्वर्णरेखा नदी जहाँ पहाड़ को पार करने की चेष्टा में पहाड़ पर चढ़ती है, वहाँ पानी की कई धाराएँ हो जाती है, और जब सबकी सब धाराएँ एक होकर पहाड़ से नीचे गिरती है, एक विचित्र दृश्य दिखलाई देता है, यहाँ हुंडरू का झरना है। इसकी ऊँचाई 243 फुट है। उजला पानी ऐसा प्रतीत होता है कि पानी के चक्कर और भँवर में पिसकर पत्थर का सफेद चूर्ण गिर रहा है।

Class 10 Notes, Model Paper, Objective & Subjective PDF, Question Bank के Mob. 8210423200 पर मैसेज करें |

11. गाँव के किसान सिरचन को क्या समझते थे?

उत्तर-सिरचन एक कुशल कारीगर था। एक समय था कि लोग उसकी कारीगरी के कायल थे। लेकिन खेती-बारी में उसका मन नहीं लगता। दूसरे मजदूर खेत पहुँचकर एक-तिहाई काम कर चुके हैं तब सिरचन पगडंडी पर तौल-तौलकर पाँव रखता हुआ धीरे-धीरे पहुँचता है। इसलिए गाँव के किसान सिरचन को बेकार ही नहीं 'बेगार समझते हैं।

12. सिरचन को पान का बीड़ा किसने दिया?

उत्तर-सिरचन को पान का बीड़ा मानू दीदी ने दिया था। मँझली भाभी के कटुवचन के कारण सिरचन को ठेस लगती है। इसी चोट को कम करने के लिए मानू दीदी पान का बीड़ा देते हुए बोली काम-काज का घर है, पाँच तरह के लोग पाँच किस्म की बात करेंगे। तुम किसी के बात पर ध्यान मत दो।

13. सिरचन किस तरह की कारीगरी करता था?

उत्तर-सिरचन जाति का कारीगर था। एक-एक मोथी और पटेर को हाथ में लेकरबड़े जतन से उसकी कुच्ची बनाता। फिर, कुच्चियों को रंगने से लेकरसुतली सुलझाने में पूरा दिन समाप्त। मोथी घास और पटेर की रंगीन शीतलपाटी, बाँस तीलियों की झिलमिलाती चिक, सतरंगे डोर के मोढ़े, भूसी चुन्नी रखने के लिए पूँज की रस्सी के बड़े-बड़े जाले, हलवाहों के लिए ताल के सूखे पत्तों की छतरी टोपी तथा इसी तरह के काम सिरचन कर कारीगर बन गया था।

14. रेलगाड़ी पर बैठी मानू को सिरचन ने अपनी ओर से कौन से सौगातदिये ?

उत्तर-रेलगाड़ी के खिड़की के पास अपने पीठ पर लदे हुए बोझ को उतारते हुए, मानू दीदी से कहता है यह मेरी ओर से है। इसमें सब चीज है दीदी।शीतलपाटी, चिक और एक जोड़ी आसानी कुश की।

15. पद्मा को अशोक से बदला लेने का अच्छा अवसर था, तब भी उसने अशोक को जीवित क्यों छोड़ दिया?

उत्तर-पद्मा निहत्थों पर बार नहीं करना चाहती। उसने अशोक की प्रतिज्ञा, कि वह स्त्रियों पर हथियार नहीं उठायेगा को यादकर उसे जीवित छोड़ दिया।

16. पद्मा के ललकारने पर भी अशोक ने युद्ध करना स्वीकार क्यों नहीं किया?

उत्तर-पद्मा के ललकारने पर भी अशोक युद्ध करना स्वीकार नहीं किया क्योंकि उनके सामने कलिंग महाराज की वीरांगना पुत्री पद्मा उनसे द्वंद्व युद्ध करना चाहती थी। अशोक कहता है तुम स्त्री हो, तुम्हारी सेना भी स्त्रियों की है। मैं स्त्रियों पर शस्त्र नहीं चलाऊँगा। वे अपने सैनिकों को आदेश देते हैं अपने शस्त्र नीचे फेंक दो।

BY Ashfaque Sir A A Online Solution

Class 10 Notes, Model Paper, Objective & Subjective PDF, Question Bank के Mob. 8210423200 पर मैसेज करें |

17. अशोक का मन युद्ध से कैसे बदला ?

उत्तर-कलिंग के महाराज के मारे जाने और उनके सेनापति के बंदी हो जाने के बाद युद्ध का नेतृत्व करने महाराज की कन्या पद्मा आती है। अशोक अपने सामने स्त्रियों की सेना देखकर हथियार फेंक देते हैं। पद्मा बुद्ध के लिए ललकारती है, तो अशोक कहते हैं कि शास्त्र स्त्रियों से युद्ध करने की इजाजत नहीं देता। पद्मा कहती है क्या शास्त्र की आज्ञा है कि तुम निरपराधियों की हत्या करो? अशोक सिर झुका लेते हैं। लाखों प्राणियों को हत्या से उनका मन पिघल जाता है और मन ही मन कभी युद्ध न करने का निर्णय लेते हैं।

18. ईर्ष्यालु से बचने का क्या उपाय है?

उत्तर-ईर्ष्यालु मनुष्य आदत से लाचार होते हैं। उन्हें अपने उपवन में आनंद नहीं मिलता, वे दूसरों के सुख से दुखी रहते हैं। वे अपनी उन्नति के लिए उद्यम करना छोड़कर वह दूसरों को हानि पहुँचाने को ही अपना श्रेष्ठ कर्तव्य समझने लगता है। इसलिए ऐसे व्यक्ति से दूर रहना चाहिए।

नीत्से का भी कहना है ईर्ष्यालु लोग बाजार की मक्खियों के समान होते हैं, जो अकारण ही हमारे चारों ओर भिनभिनाया करते हैं और हमें कष्ट पहुँचाते हैं। इसलिए उन्हें छोड़कर एकान्त की ओर भाग जाना चाहिए।

19. ईर्ष्या को अनोखा वरदान क्यों कहा गया है?

उत्तर-ईर्ष्या को अनोखा वरदान इसलिए कहा गया है कि जिस मनुष्य में ईर्ष्या घरबना लेती है, वह उन चीजों से आनंद नहीं उठाता, जो उसके पास मौजूदहैं, बल्कि उन वस्तुओं से दुःख उठाता है, जो दूसरों के पास हैं। उसके मनमें अपनी वस्तु से संतोष नहीं होता, परायी वस्तु से डाह होती है।

20. ईर्ष्या की बेटी किसे और क्यों कहा गया है?

उत्तर-ईर्ष्या की बेटी का नाम निंदा है क्योंकि निंदा ईर्ष्या से ही उत्पन्न होती है। जो व्यक्ति ईर्ष्यालु होता है, वही व्यक्ति बुरे किस्म का निंदक भी होता है। दूसरों की निंदा वह इसलिए करता है कि इस प्रकार, दूसरे लोग जनता अथवा मित्रों की आँखों में गिर जाएँगे और तब जो स्थान रिक्त होगा, उस पर अनायास में ही बिठा दिया जायेगा। यानी दूसरों की निंदा के द्वारा अपना बड़प्पन पाना चाहता है।

21. विक्रमशिला नामकरण के संदर्भ में प्रचलित जनश्रुति क्या है?

उत्तर- विक्रमशिला नामकरण के संदर्भ में जनश्रुति है कि विक्रम नामक यक्ष का दमन कर इस स्थान पर विहार (भ्रमण योज्य भूमि) बनाया गया। जिसके कारण इस भू-भाग का नाम विक्रमशिला रखा गया।

Class 10 Notes, Model Paper, Objective & Subjective PDF, Question Bank के Mob. 8210423200 पर मैसेज करें |

22. संजू कैसी लड़की थी? उसे किस चीज का शौक था ?

उत्तर- संजू, गुलाब की फूल-सी नन्हीं छोटी लड़की है। वह स्वभाव से हँसमुख है। उसे किताबें पढ़ने का शौक है।

23. संजू को डायरी लिखने की प्रेरणा किससे मिली।

उत्तर- संजू को डायरी लिखने की प्रेरणा बापू के 'सत्य के प्रयोग' को पढ़कर मिली। इस काम में उसके माता-पिता ने भी भरपूर सहयोग दिया।

24. खेमा द्वारा चप्पल की माँग करने पर कसारा ने बेरूखी क्यों दिखाई?

उत्तर-खेमा द्वारा चप्पल की माँग करने पर कसारा बेरूखी दिखाता है क्योंकि चप्पल खरीदने की बात पर गुस्सा आ जाता है। कसारा खेमा को अपने चाय दुकान पर काम करने के लिए खरीदा था इसलिए कसारा खेमा के ऊप खर्च नहीं करना चाहता है।

25. खेमा कसारा के होटल पर काम क्यों करता था?

उत्तर-खेमा एक गरीब माँ बाप का बेटा था। गरीबी के कारण उसके माता-पिता अपने बच्चों के दायित्व को पूरा करने में असमर्थ थे। इसलिए उन्होंने अपने बेटे खेमा को कसारा के यहाँ बेच दिया था। इस कारण से खेमा कसारा के होटल पर बाल श्रमिक के रूप में काम करता था।

26. 'हौसले की उड़ान' पाठ के अनुसार जैनव खानम का परिचय दें।

उत्तर-जैनव खानम, मथुरापुर कहतरवा पंचायत शिवहर के 94 वर्षीय मोहम्मद अब्दुल रहमान की पोती है। इसके माता-पिता फुलबीबी और मोहम्मद मंसूर खान है। पर्दा प्रथा की जकड़बंदी के बावजूद वह बी० ए० में पढ़ रही है।ब्लू बेल्ट प्राप्त जैनव आत्मरक्षार्थ लड़कियों को कराटे का प्रशिक्षण भी दे रही है। दृढ इच्छा शक्ति के कारण असाधारण कार्य कर समाज के हौसले को बढ़ाया है।

27. अब्दुल रहमान खान को अपनी पोती जैनव खानम पर गर्व क्यों है?

उत्तर-जैन को तालीम के प्रति गहरी ललक थी। वह अपनी मेहनत और लगन से बी० ए० तक पहुँची, साथ ही लड़कियों को महिला शिक्षण केंद्र में शिक्षित भी करती है। ब्लू बेल्ट प्राप्त जैनवं आत्मरक्षार्थ लड़कियों को कराटे का प्रशिक्षण भी देती है। इसलिए अब्दुल रहमान खान को अपनी पोती जैनव खानम पर गर्व है।

28. कर्पूरी ठाकुर को कौन-कौन-सा कार्य करने में आनन्द मिलता था?

उत्तर- कर्पूरी ठाकुर को चरवाही करने, ग्रामीण गीत गाने गाँव की मंडली में डफली बजाने तथा पीड़ितों की सेवा करने में आनन्द आता था।

BY Ashfaque Sir A1 Online Solution

Class 10 Notes, Model Paper, Objective & Subjective PDF, Question Bank के Mob. 8210423200 पर मैसेज करें |

29. कर्पूरी ठाकुर अपने परिजनों को प्रतीक्षा करने के लिए क्यों कहते हैं?

उत्तर- जननायक कर्पूरी ठाकुर के लिए सम्पूर्ण देश परिवार था। उन्होंने देश की जनता को पराधीनता की बेड़ी में जकड़ा देखा जो उनके लिए असहनीय था। इसलिए उनका मानना था कि जबतक देश के प्रत्येक निवासी को सम्मानजनक और सुविधा संपन्न स्वाधीन, जीवनयापन करने का अवसर नहीं मिलेगा, तबतक मेरे परिजनों को भी प्रतीक्षा करनी होगी।

30. सचिवालय स्थित कार्यालय में पहले दिन कर्पूरी ठाकुर ने कैसा दृश्य देखा तथा उस पर उन्होंने क्या निर्णय लिया?

उत्तर- पहली बार सचिवालय स्थित अपने कार्यालय कक्ष में जाने के लिए पहुँचे तो उन्हें ऊपरी तल पर ले जाने के लिए लिफ्ट से ले जाया गया। वे लिफ्ट के ऊपर अंग्रेजी में लिखे वाक्य को पढ़ते चौक पड़े—"Only for officers' कर्पूरी ठाकुर को इसमें सामंती प्रथा की बू आई। उन्होंने वरीय पदाधिकारियों के प्रतिरोध के बावजूद लिफ्ट का प्रयोग सबके लिए आम कर दिया।

31. लेखक ने वैद्य और हकीम पर क्या-क्या कहकर व्यंग्य किया है? उनमें से सबसे तीखा व्यय किस पर है? उल्लेख कीजिए।

उत्तर-लेखक वैद्य और हकीम के नामकरण रूढ़िवादी प्रवृत्ति, ग्रह नक्षत्र के प्रति आस्था पर उनके पहनावा, स्वरूप आदि पर व्यंग्य किया है। नामकरण पर व्यंग्य करते हुए आयुर्वेदाचार्य, रसज्ञ रंजन, चिकित्सा मार्तण्ड कविराज सुखदेव शास्त्री कहकर संबोधित करते हैं। वैद्य जी के पहनावा पर व्यंग्य करते हुए कहते हैख़सूत के नाम पर जनेऊ था, जिसका रंग देखकर यह शंका होती थी कि कुस्ती लड़कर आ रहे हैं। लेखक का सबसे तीखा व्यंग्य वैद्य जी के स्वरूप पर करते है। लेखक कहते हैं कि वैद्यजी अपनी तंदुरुस्ती मरीजों में बाँट दी है।

32. लेखक को बीमार पड़ने की इच्छा क्यों हुई?

उत्तर-लेखक पैंतीस वर्ष का हट्टा-कट्टा आदमी है। आजतक वह कभी बीमारनहीं पड़ा। लोगों को बीमार देखकर लेखक को बीमार पड़ने की इच्छा होती है। लेखक की यह भी इच्छा रहती है कि बीमार पड़ने पर पत्नी उनकी खूब सेवा करेगी और हंटले बिस्कुट खाने को मिलेगा। साथ ही दोस्त लोग आकर मेरे सामने बैठेंगे और गम्भीर मुद्रा में मेरा हाल चाल पूछेंगे।

33. कर्मवीर की पहचान क्या है?

उत्तर-सच्चा कर्मवीर साहसी और परिश्रमी होते हैं। वह विघ्न और बाधाओं से नहीं घबराता। कठिन से कठिन कार्य को भी वह हँसते-हँसते पूरा कर लेता है। बड़े-बड़े संकट भी उसे अपने काम से विचलित नहीं कर सकता। वह जिस काम को आरम्भ करता है उसे समाप्त करके ही दम लेता है। वह किसी कार्य को बीच में अधूरा नहीं छोड़ता। यही कर्मवीर की पहचान है।

Class 10 Notes, Model Paper, Objective & Subjective PDF, Question Bank के Mob. 8210423200 पर मैसेज करें

34. आप अपने को कर्मवीर कैसे साबित कर सकते हैं?

उत्तर-हम अपने को कर्मवीर साबित करने के लिए असंभव कार्य को संभव कर ही दम लेंगे, विघ्न बाधाओं को देखकर घबराएँगे नहीं। अपने कर्मबल और बुद्धिबल से हर मुश्किल को आसान बनाकर, उसे हँसते-हँसते पूरा कर लेंगे। हम उत्साह और पुरुषार्थ का परिचय देते रहेंगे।

35. अपने देश की उन्नति के लिए आप क्या-क्या कीजिएगा?

उत्तर-अपने देश की उन्नति के लिए हम विघ्न-बाधाओं से घबराएँगे नहीं बल्कि असंभव से असंभव कार्य को पूरा करेंगे। पर्वतों को काटकर सड़के बनाएँगे, मरुभूमियों में नदियों का निर्माण करेंगे, सागर की अतल गहराइयों में जहाज चलायेंगे, जंगलों में महामंगल मनाएँगे। हम अपने देश की उन्नति और नवनिर्माण के लिए उत्साह और पुरुषार्थ का परिचय देंगे।

36. दुर्जन का साथ किस प्रकार हानिकारक है?

उत्तर-अच्छे लोगों के संगति में यदि दुर्जन आते भी हैं तो उनके स्वभाव में परिवर्तन नहीं होता है। ऐसे लोगों को सुधारना मुश्किल होता है, चाहे हम कितना ही प्रयास न कर लें। जैसे हींग को कपुर में रख देने के बाद भी हींग में कर्पूर का सुगंध नहीं आता। इसलिए दुर्जन का साथ हानिकारक होताहै|

37. सुख-दुख को समान रूप से क्यों स्वीकारना चाहिए?

उत्तर-कवि बिहारी लोगों को सुख-दुख दोनों स्थिति में एक समान रहने की सलाह दी है। कवि का कहना है कि विपत्ति या दुख की घड़ी में व्यक्ति को हताश या निराश नहीं होना चाहिए न ही सुख में ईश्वर / पैगम्बर / अल्लाह को भूलना चाहिए।
मनुष्य को सुखदुख को समान रूप से स्वीकारना चाहिए क्योंकि सुख औरदुख रूपी पहिए के सहारे ही जीवन की गाड़ी कर्मपथ पर बढ़ती है।

38. आपको यदि ईश्वर/ अल्लाह से कुछ माँगने की जरूरत हो तो आप क्या क्या माँगेंगे ?

उत्तर-यदि ईश्वर / अल्लाह से हमें कुछ माँगने की जरूरत हो तो हम यही प्रार्थना करेंगे कि मुझे बुराई से बचाना तथा जो नेक यह हो उसी पर चलने की सीख देना। हममें इतनी शक्ति देना कि हम गरीबों, दर्दमन्दों और वृद्धों की हिमायत कर सकें।

39. 'बच्चे की दुआ' शीर्षक कविता के रचयिता कौन हैं? यह किस प्रकार की कविता है?

उत्तर-'बच्चे की दुआ' शीर्षक कविता के रचयिता 'मो० इकबाल' हैं। यह एक प्रार्थना गीत है, इसमें दर्दमंद और वंचितों की हिफाजत का संकल्प है तथा खुद को बुराई से बचाकर नेक राह पर चलने की दुआ माँगी गयी है।

BY Ashfaque Sir A A Online Solution

40. सगुण भक्तिधारा और निर्गुण भक्तिधारा किसे कहते हैं?

उत्तर- सामान्यतः ईश्वर भक्ति के दो रूप माने गए हैं— सगुण भक्तिधारा और निर्गुण भक्तिधारा। सगुण भक्तिधारा में ईश्वर के साकार रूप की आराधना की जाती है। जबकि निर्गुण भक्तिधारा में ईश्वर के निराकार (बिना आकार के) स्वरूप की आराधना की जाती है।

41. कबीर के अनुसार ईश्वर का निवास कहाँ है?

उत्तर- कबीर के अनुसार, ईश्वर मंदिर, मस्जिद, काबा काशी, क्रिया-कर्म अथवा योग-वैराग में नहीं है। वह सच्चे हृदय में निवास करता है। वह सच्चे मन से तलाश करने पर क्षणभर में मिलता है। ईश्वर बाहर नहीं भीतर है।

42. पीपल के पेड़ हमारे लिए किस प्रकार उपयोगी है?

उत्तर- पीपल का पेड़ हमारे लिए सदैव उपयोगी है। यहाँ थके मनुष्यों और पशु-पक्षियों को शांति और शीतलता मिलती है। पक्षियों का यह विश्राम स्थल है। पीपल का पेड़ प्राणियों के लिए प्राण वायु (ऑक्सीजन) देता है तथा हमारे द्वारा छोड़ा गया दूषित वायु को ग्रहण करता है।

43. वन्य प्रान्त के सौन्दर्य का वर्णन कीजिए।

उत्तर- वन्य प्रान्त का सौंदर्य दर्शनीय होता है। विविध प्रकार के पेड़, लताएँ, झरना, झील और नदियों से बना प्रांत की शोभा मनोरम होती है। चिड़ियों का कलरव, मोर का नाचना, हंस की क्रीड़ा ये सभी जंगल की शोभा को बढ़ाते रहते हैं।

44. 'खुशबू रचते हैं हाथ' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर-'खुशबू रचते हैं हाथ' से तात्पर्य है खुबसूरत और खुशबूदार अगरबत्तियाँ बनाने वाले दलित मजदूर से। वे अपने वचित हाथों से सृष्टि का श्रृंगार करते हैं लेकिन खुद बदबूदार जगहों पर रहते हैं। खुशबू रचने वाले हाथ दूसरों के लिए स्वच्छ और सुगंधित वातावरण का निर्माण करते हैं पर अपना जिंदगी नरक में बिताते हैं। कवि खुशबू रचने वाले हाथों की दुर्दशा का मार्मिक चित्रण करते हैं।

45. खुशबू रचने वाले हाथ कैसी परिस्थिति में रह रहे हैं?

उत्तर-खुशबू रचने वाले हाथ दूसरे को स्वस्थ वातावरण में जीने का अवसर प्रदान करते हैं समाज में खुशबू फैलाने का कार्य करते हैं लेकिन उनकी ही जिंदगी नरक बनी हुई है। वे आर्थिक तंगी और गरीबों की भयावह परिस्थितियों में रह रहे हैं। वे कई गलियों के बीच, नालों के पार, कूड़े-करकट और बदबूदार टोले के अन्दर रहने के लिए मजबूर है।

Class 10 Notes, Model Paper, Objective & Subjective PDF, Question Bank के Mob. 8210423200 पर मैसेज करें |

46. लक्ष्मीबाई का बचपन किस प्रकार के खेलों में बीता?

उत्तर-लक्ष्मीबाई बचपन में बरछी, ढाल, तलवार, कृपाण आदि हथियारों से खेला करती थी । ये हथियार ही उनके खिलौने थे। बचपन से ही सैन्य शिक्षा में उनकी रुचि थी। नकली युद्ध करना, व्यूह रचना, सैनिकों को घेरना, दुर्ग तोड़ना, घोड़े पर चढ़ना, तलवार बरछी चलाना उसका प्रतिदिन का खेल था। इस प्रकार घातक हथियारों से खेलने में उसका बचपन बीता।

47. 'लक्ष्मीबाई' ने अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई क्यों लड़ी?

उत्तर-लक्ष्मीबाई की शादी झाँसी के राजा के साथ बड़ी धूमधाम से हुई थी लेकिन कुछ दिनों बाद ही राजा की मृत्यु हो गई। झाँसी उत्तराधिकारीहीन राज्य हो गया। तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड डलहौजी को झाँसी हड़प करने का अच्छा अवसर हाथ लग गया। उसने तुरन्त सेना भेजकर झाँसी के किले पर झण्डा फहरा दिया। इसे देख रानी लक्ष्मीबाई ने म्यान से तलवार निकाल लीऔर अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई शुरू कर दी।

48. झाँसी के मैदान में लक्ष्मीबाई से युद्ध करने कौन लेफ्टिनेंट पहुँचा और वह क्यों भागा?

उत्तर-झाँसी के मैदान में लक्ष्मीबाई से युद्ध करने लेफ्टिनेंट वॉकर पहुँचा और वहजख्मी होने के कारण भागा।

49. सुदामा की दीन दशा देखकर श्रीकृष्ण किस प्रकार भाव-विह्वल हो गये?

उत्तर-सुदामा की दीन-दशा देखकर श्रीकृष्ण करुणा से भर गये और उनकी आँखों से आँसू बह चले। पानी से भरी परात को छूने की भी जरूरत नहीं पड़ी, कृष्ण ने अपने आँसुओं से सुदामा के पाँव धो डाले।

50. सुदामा को कुछ न देकर उनकी पत्नी को सीधे वैभव सम्पन्न करने का क्या औचित्य था?

उत्तर-सुदामा कृष्ण के बालसखा थे। वे दीन-हीन और संकोची स्वभाव के थे। कृष्ण अपना मित्रधर्म निभाते हुए सुदामा को कुछ न देकर उनकी पत्नी को सीधे वैभव सम्पन्न कर देते हैं। इसका औचित्य था कि वे अपने मित्र को संकोच में नहीं डालना चाहते थे, और न अपना बड़प्पन प्रकट करना चाहते थे। ऐसा कर श्रीकृष्ण ने उदारता और मित्रभाव का परिचय दिया। यह अद्भुत था।

51. गुरु के यहाँ की किस बात की बाद श्रीकृष्ण ने सुदामा को दिलाई ?

उत्तर-एक बार आश्रम में गुरुमाता ने सुदामा और कृष्ण को खाने के लिए चना देती है। सुदामा अकेले ही इसे पूरा खा जाते हैं। कृष्ण को कुछ भी नहीं देते। गुरु के यहाँ की यही बात कृष्ण याद दिलाते हुए कहते हैं सुदामा तुम तो बचपन से ही चोरी करने में प्रवीण हो।

BY Ashtaque Sir
A Online Solution

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पुत्र वधु द्वारा पुत्र की मुखाग्नि दिलवाना भगत के व्यक्तित्व की किस विशेषता को दर्शाता है?

उत्तर- बालगोबिन भगत सच्चे कबीरपंथी थे। वे कबीर के आदर्शों एवं मान्यताओं का पालन करते थे और उन्हें अपना 'साहब' मानते थे।

बालगोबिन भगत अपने पुत्र की मृत्यु पर विलाप नहीं करते बल्कि मग्नहो गीत गाये जा रहे थे। गाते-गाते पुत्र-वधु के नजदीक भी जाते और उसे रोने के बदले उत्सव मनाने को कहते, उनका करना था- आत्मा परमात्मा के पास चली गई, विरहिणी अपने प्रेमी से जा मिली, भला इससे बढ़कर आनंद की बात क्या होगी?

सामाजिक परम्परा के अनुसार मृत शरीर के मुखाग्नि पुरुष वर्ग के हाथों दी जाती है लेकिन पुत्र वधु से पुत्र की मुखाग्नि दिलाई, बालगोजिन भगत कबीर दर्शन से प्रभावित थे, इसलिए रूढ़िवादी विचारधारा, धार्मिक पाखण्ड और कर्मकाण्ड के विरोधी थे। वे एक ऐसे गृहस्थ वैरागी थे जो रोग-शोक, माया मोह से ऊपर थे। यह कार्य भगत के व्यक्तित्व की सच्चाई और महानता को दर्शाता है। यही उनके व्यक्तित्व की विशेषता थी।

2. सिरचन चिक और शीतलपाटी स्टेशन पर ले जाकर मानू को देता है। इससे उसकी किस विशेषता का पताचलता है?

उत्तर-सिरचन एक स्वाभिमानी एवं संवेदनशील कलाकार है। वह स्नेह का भूखा है, रुपये-पैसों का नहीं। मँझली भाभी के कटुवचन से आहत होकर मानू दीदी के लिए चिक और शीतलपाटी बनाना छोड़ देता है। बाद में उसे महसूस होता है, मानू दीदी यदि बिना इन सामानों के ससुराल चली जाती है। तो उसे अपमानित होना पड़ेगा। सिरचन एक कुशल कारीगर के साथ-साथ संवेदनशील और व्यावहारिक इंसान था। वह मानू दीदी को निराश नहीं करना चाहता था। इसलिए गाड़ी खुलने से पहले सारा सामान स्टेशन पहुँचा देता है। इससे स्पष्ट होता है एक सफल कारोगर सिरचन अपनी कला को महत्त्व देते हुए स्वनिर्मित वस्तुओं का उपहार देकर आत्मीयता का अनोखा परिचय देता है। यही सिरचन के गुण और स्वभाव की विशेषता है।

3. 'ठेस' शीर्षक कहानी में कौन-सा पात्र आपको सबसे अच्छा लगा और क्यों?

उत्तर- 'ठेस' शीर्षक कहानी में मुझे सबसे अच्छा पात्र सिरचन, लगा क्योंकि वह मानवीय गुणों से युक्त स्वाभिमानी कलाकार है। वह भाव का भूखा है, धन का नहीं। वह जिस काम को अपने हाथ में लेता, उसे पूरी तन्मयता से करता है। मानू दीदी के लिए शीतलपाटी और चिक बनाते समय मंझली भाभी के कटुवचन से एक कलाकार के दिल को ठेस लगती है। वह क्रोधित हो, काम अधुरा छोड़कर चला जाता है क्योंकि संवेदनशील और स्वाभिमानी कलाकार है। सिरचन मानू दीदी को निराश नहीं करना चाहता था इसलिए उसने सारे सामान को ससुराल जाते समय स्टेशन पर पहुंचा देता है। इसके लिए मानू दीदी मोहर छापवाली धोती का दाम निकालकर देने लगी।

Class 10 Notes, Model Paper, Objective & Subjective PDF, Question Bank के Mob. 8210423200 पर मैसेज करें |

सिरचन ने जीभ को दाँत से काटकर दोनों हाथ जोड़ दिए। इससे स्पष्ट होता है सिरचन एक संवेदनशील मानवीय गुणों से युक्त दक्ष कलाकार है।

4. कहानी के किन-किन प्रसंगों से ऐसा प्रतीत होता है कि सिरचन अपने काम को ज्यादा तरजीह देता था। लगभग 100 शब्दों में उल्लेख कीजिए।

उत्तर-सिरचन चिक, शीतलपाटी आदि बनाने का दक्ष कारीगर था। कुशल कारीगरीके कारण गाँव में उसकी बड़ी पूछ थी और कारीगरी में उसकी कोई सानीनहीं थी। बड़े-बड़े बाबू लोग उसकी खुशामद करते थे। जब सिरचन अपने काम में मग्न रहता था तो उसे खाने पीने की सुध नहीं रहती थी। इसकी तन्मयता में बाधा पड़ा कि गेहूँअन सौंप की तरहफुफकार उठता।

इसी प्रकार चिक बनाने के क्रम में वह मरन था, सिरचन को जलपान में चिउरा तथा गुड़ का एक सुखा ढेला दिया गया था। उसे देखकर उसकी नाक पर दो रेखाएँ उभर आई, पर वह चुपचाप काम में मग्न रहा।

सिरचन अपने काम के प्रति ईमानदार था, जो एक कुशल कारीगर की निशानी है। कहानी के इन सभी प्रसंगों से ऐसा प्रतीत होता है कि सिरचन अपने काम को ज्यादा तरजीह देता था।

4. विक्रमशिला विश्वविद्यालय का वर्णन करें।

उत्तर- आठवीं शताब्दी के मध्य विक्रमशिला विश्वविद्यालय का आविभांव पालवंश के सर्वाधिक प्रतापी राजा धर्मपालके संरक्षण में हुआ था। यह आधुनिक भागलपुर जिला के कहलगाँव थाना क्षेत्र में अवस्थित है। यह आज के कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय एवं ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से कहीं अधिक उन्नत और महत्त्वपूर्ण था।

विक्रमशिला के प्रांगण में छः महाविद्यालय थे। जहाँ द्वारपण्डितों के समक्ष मौखिक परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले छात्र ही प्रवेश पाते थे। हरिभद्र यहाँ के प्रथम आचार्य कुलपति थे। यहाँ आर्यभट् और अतिश दीपंकर सरीखें विद्वान हुए. आते थे। यहाँ दूर-दूर से उच्च शिक्षा व शोध के लिए देशी-विदेशी छात्र

विक्रमशिला विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में तंत्र विद्या के अतिरिक्त व्याकरण, न्याय, सृष्टि-विज्ञान, शब्द-विद्या, शिल्प-विद्या, चिकित्सा-विद्या आदि शामिल था।

तेरहवीं सदी के आरंभ में तुर्कों के आक्रमण के कारण इस विश्वविद्यालय का सर्वनाश हो गया। यह भारत की अस्मिता का अभेद्य कवच था, जो अपनी बौद्धिक शक्ति के हो बदौलत अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज पर छाया हुआ था।

5. महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालें।

उत्तर-महाप्राण निराला अप्रतिम व्यक्तित्व के थे। उनका लंबा तगड़ा स्वस्थ शरीर, 'चौड़ी छाती बड़ी-बड़ी आँखें दमकती दंतपक्ति तथा माधुर्य एवं ओजपूर्ण कंठ उनके व्यक्तित्व में चार चाँद लगाते थे। वे दयालु एवं चिन्तशील व्यक्ति थे। उनके ओठ पतले, बाल लंबे तथा घुंघराले थे। उनमें अद्भुत मेधाशक्ति थी, जहाँ भी बैठ जाते, उसे

Class 10 Notes, Model Paper, Objective & Subjective PDF, Question Bank के Mob. 8210423200 पर मैसेज करें

अपने व्यक्तित्व से मनोरम बना देते थे, लेकिन समाज की आर्थिक विषमता पर क्रुद्ध हो जाते थे।

निष्कर्ष: निराला का व्यक्तित्व सागर-सा शांत, हिमालय-सा धैर्यवान तथा वायु-सा बेफिक्र था।

6. महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' के संबंध में अपने विचार लिखें।

उत्तर-महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला आधुनिक काल के बेहद प्रतिष्ठित कवि हैं। महाप्राण 'निराला' गरीबों एवं बेसहारों के सच्चे साथी थे। उनमें परमात्मा की तरह दीनबंधुता थी। वे जीवन पर्यन्त दीन-दुखियों की सेवा-सहायता करते रहे। यही कारण है कि निराला को दीनबंधु कहा गया है।

निराला याचकों के लिए तो कल्पतरू थे। इनको अपनी आवश्यकताओं की तनिक भी चिंता नहीं होती थी, लेकिन जब दूसरे याचक की जरूरत नहीं पूरी होती थी, तब वे काफी अधीर हो उठते थे।

महाकवि निराला का व्यक्तित्व बहुत आकर्षक था। आकर्षक रूप, लम्बे-तगड़े, डील-डॉल शरीर, सुगठित स्वास्थ्य, विलक्षण मेधा शक्ति, ललित मनहर कंठ, दयाई हृदय चिंतनशील मस्तिष्क, उद्भावना शक्ति संपन्न बुद्धि- ये सब उनकी भगवद् विभूतियाँ थीं। जिस मंडली में वे बैठ जाते, उसे अपने व्यक्तित्व से जगमगा देते थे।

महाकवि निराला का अधिकांश अवकाश-काल दीनों की दुनिया में ही बीतता था। वहाँ फुटपाथों पर भिखारियों के सिवा बहुतेरे निराश्रित गरीब और कुली - कबाड़ी भी रात में पड़े रहते थे। उनके लिए बीड़ी, मूढ़ी, भूजा, चना, मूँगफली आदि खरीदकर वितरण करने वाला धनकुबेरों की उस नगरी में निराला के सिवा दूसरा कोई न देखा गया। इसी व्यक्तित्व के कारण महाकवि रहीम की पंक्ति महाकवि निराला पर सटीक बैठती है- "जो रहीम दीनहि लखे, दीनबन्धु सम होय। "

7. निम्न पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए: "धन उनके पास अतिथि के समान अल्पावधि तक ही टिकने आता था।"

उत्तर-प्रस्तुत पंक्ति 'दीनबंधु निराला' शीर्षक पाठ से ली गई है। इसके निबंधकार आचार्य शिवपूजन सहाय हैं। इन्होंने निराला के व्यक्तित्व और जीवन के अनछुए पहलुओं का उद्घाटन करते हुए लिखा है कि निराला अपनी शक्ति के अनुसार दीन-दुखियों की सेवा सहायता करते रहते थे। उनके मन में दीनों की सेवा सुश्रुषा की कामना ही जागती रहती थी। वे इतने उदार प्रवृत्ति के थे कि जब भी उनके पास धन आता तो वे मजदूरों, भिखारियों, निराश्रित गरीब लोगों की आवश्यकता की चीजे खरीदकर बाँट देते थे। इसलिए उनके पास अधिक समय तक धन नहीं ठहरता था। इसलिए लिए निबंधकार कहते हैं कि धन उनके पास अतिथि केसमान अल्पावधि तक ही टिकने आता था।

Class 10 Notes, Model Paper, Objective & Subjective PDF, Question Bank के Mob. 8210423200 पर मैसेज करें |

8. कर्पूरी ठाकुर के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालें। (2018)

उत्तर- बिहार की विभूतियों में जननायक कर्पूरी ठाकुर अत्यंत सम्माननीय हैं। कर्पूरी ठाकुर का जन्म 24 जनवरी, 1921 को समस्तीपुर के निकट पितौझिया नामक गाँव में हुआ था। इनका बाल्यकाल अन्य गरीब परिवार के बच्चों की ही तरह खेल-कूद तथा गाय और अन्य पशुओं को चराने में बिता।

1940 ई० में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण कर दरभंगा के चंद्रधारी मिथिला कॉलेज में आई०ए० में नाम लिखवाया। आर्थिक अवस्था ठीक न होने के कारण घर से ही घुटने तक धोती पहने कंधे पर गमछा रखे, बिना जूता-चप्पल के नित्य कई किलोमीटर की यात्रा करते हुए कठिन परिश्रम कर पढ़ाई की।

कर्पूरी ठाकुर में बचपन से ही नेतृत्व क्षमता थी। 1942 ई० में अगस्त क्रांति के दौरान उन्होंने कॉलेज का त्यागकर लोकनायक जयप्रकाश नारायण द्वारा गठित " आजाद दस्ता" के सक्रिय सदस्य बन गये। इस दौरान उन्हें जेल की यात्रा भी करनी पड़ी। 1952 से 1988 के अपने जीवन के अंतिम दिन तक बिहार विधान सभा के सदस्य रहे। इस दौरान बिहार विधानसभा के कार्यवाहक अध्यक्ष, विरोधी दल के नेता, उपमुख्यमंत्री एवं दो बार बिहार के मुख्यमंत्री भी बने।

9. निम्नलिखित पद्यांश का अर्थ लगभग 100 शब्दों में लिखें ?

हजार भेष धर के आई मौत तेरे द्वार पर
मगर तुझे न छल सकी, चली गई वो हारकर
नई सुबह के संग सदा तुझे मिली नई उमर
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला जमीन पर
तू जिन्दा है तो.....

उत्तर-प्रस्तुत पद्यांश हमारे पाठ्य पुस्तक के 'तू जिंदा है तो शीर्षक कविता से ली गई है। इसके रचनाकार शंकर शैलेन्द्र हैं। यह कविता गहरे जीवन राग और उत्साह को प्रकट करती है।

प्रस्तुत पंक्तियों का भाव है कि मृत्यु तुम्हारे दरवाजे पर हजार वेश बनाकर उपस्थित होती है परंतु तुम्हारे संघर्ष के कारण मौत तुम्हें छल नहीं सकी। नयी सुबह के साथ तुम्हें, जिंदगी की नयी उम्र मिली है। मौत तेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकी। तुम अपने पुरुषार्थ से धरती पर स्वर्ग उतार लाओ, मौत से मत डरो।

कवि लोगों को उत्साहित करते हुए कहते हैं कि तुम्हारे सामने अनेक प्रकार की समस्याएँ, अनेक भेष में आई लेकिन तुम्हारी वीरता के आगे पराजय स्वीकार कर भाग गई। तुम्हे अपने पौरुष और पराक्रम के फलस्वरूप नया जीवन मिला है। तुम अपनी कठिन साधना से इस धरती को स्वर्ग जैसा बना दो।

10. कर्मवीर की पहचान क्या है?

उत्तर-सच्चा कर्मवीर साहसी और परिश्रमी होते हैं। वह विघ्न और बाधाओं से नहीं घबराता। कठिन से कठिन कार्य को भी वह हँसते-हँसते पूरा कर लेता है। बड़े-बड़े संकट भी उसे अपने काम से विचलित नहीं कर सकता। वह जिस काम को आरम्भ

Class 10 Notes, Model Paper, Objective & Subjective PDF, Question Bank के Mob. 8210423200 पर मैसेज करें |

करता है उसे समाप्त करके ही दम लेता है। वह किसी कार्य को बीच में अधूरा नहीं छोड़ता। यही कर्मवीर की पहचान है।

11. आप अपने को कर्मवीर कैसे साबित कर सकते हैं?

उत्तर-हम अपने को कर्मवीर साबित करने के लिए असंभव कार्य को संभव कर ही दम लेंगे, विघ्न बाधाओं को देखकर घबराएँगे नहीं। अपने कर्मबल और बुद्धिबल से हर मुश्किल को आसान बनाकर, उसे हँसते-हँसते पूरा कर लेंगे। हम उत्साह और पुरुषार्थ का परिचय देते रहेंगे।

12. अपने देश की उन्नति के लिए आप क्या-क्या कीजिएगा?

उत्तर-अपने देश की उन्नति के लिए हम विघ्न-बाधाओं से घबराएँगे नहीं बल्कि असंभव से असंभव कार्य को पूरा करेंगे। पर्वतों को काटकर सड़के बनाएँगे, मरुभूमियों में नदियों का निर्माण करेंगे, सागर की अतल गहराइयों में जहाज चलायेंगे, जंगलों में महामंगल मनाएँगे। हम अपने देश की उन्नति और नवनिर्माण के लिए उत्साह और पुरुषार्थ का परिचय देंगे।

13. "मैं कहता निर्मोही रहियो, तू जाता है मोही रे।"

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति 'कबीर के पद' से ली गई है। इसके रचनाकार भक्तिकाल के अप्रतिम कवि 'कबीरदास' है।

प्रस्तुत पंक्ति के माध्यम से कवि लोगों को मोह-माया के विविध रूप जैसे- अर्थ, काम, लोभ इत्यादि से अलग रहने की सलाह देते हैं। वे कहते हैं कि सांसारिक मोह माया से ऊपर उठकर निर्मोही बनो क्योंकि मोह-माया साधना का सबसे बड़ा बाधक है।

14. ऊपर विस्तृत नभ नील-नील' में नदी झील नीचे वसुधाजामुन, तमाल, इमली, करील जल से ऊपर उठतामृणाल फुनगी पर खिलता कमल लाल।

उत्तर- प्रस्तुत काव्यांश छायावादी कविता पीपल से लिया गया है। इसके कवि गोपाल सिंह नेपाली हैं। प्रस्तुत कविता प्रकृति के विविध रूपों से हमारा आत्मीय परिचय कराती है। कविता के केन्द्र में प्राचीन पीपल का वृक्ष है जो अनेक बदलावों का साक्षी है|

कवि 'पीपल' के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए कहते हैं कि यह प्राचीन वृक्ष अचल और अंटल खड़ा है। उसके ऊपर विस्तृत नीला आकाश है। नीचे धरती पर नदी और झील है। उसके आसपास जामुन, तमाल, इमली और करील के पेड़ खड़े हैं। नीचे तालाब में जल से ऊपर कमल की नाल उठी हुई है, इस पर लाल कमल खिले हुए हैं। पीपल के आसपास का वातावरण सुन्दर और मनोहर है।

Class 10 Notes, Model Paper, Objective & Subjective PDF, Question Bank के Mob. 8210423200 पर मैसेज करें |

15. 'पीपल' शीर्षक कविता की सार्थकता पर प्रकाश डालें।

उत्तर- पीपल कविता प्रकृति के विविध रूपों से हमारा आत्मीय परिचय कराती है। यह प्राचीन पीपल वृक्ष अनेक बदलावों का साक्षी है। पीपल वृक्ष के समक्ष विभिन्न प्रकार के पेड़, झरने, नदी, चिड़िया, ऋतुएँ, दिवस चक्र सक्रिय है। यह पेड़ पशु पक्षियों के लिए आश्रय स्थली हैं। पथिक इस पेड़ की शीतल छाया में शांति महसूस करते हैं। यह वृक्ष जीवन दायिनी है।

कवि गोपाल सिंह नेपाली इस कविता के माध्यम से भारत के विशेषताओं पर प्रकाश डाला है। कवि का कहना है कि भारत हो ऐसा देश है जहाँ जो भी आए सबको आश्रय मिला और सबों ने खुशी के गीत गाए। भारत ही ऐसा देश है जहाँ पेड़-पौधों की भी पूजा की जाती है। कवि पीपल पेड़ के माध्यम से देशप्रेम की भावना भरने का प्रयास किया है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि पीपल हमलोगों के लिए उपयोगीऔर सार्थक है।

16. 'खुशबू रचते हैं हाथ' शीर्षक कविता के भाव 100-150 शब्दों में स्पष्ट करें।

उत्तर-"खूशबू रचते हैं हाथ" शीर्षक कविता वंचित लोगों के समृद्ध अवदान की संवेदनशीलता को रेखांकित करती है। इसके कवि 'अरुण कमल' हैं।

'खुशबू रचते हाथ' शीर्षक कविता के माध्यम से कवि कहते हैं किजो मजदूर दुनिया को खुशबू बाँटते हैं, जिन लोगों के श्रम से गाँव-शहर कीसुन्दरता बढ़ती है वे स्वयं बदबूदार, गंदी बस्तियों में रहने के लिए मजबूर हैं।

कवि कहते हैं कि जिन मासूम बच्चों की उम्र खेलने, खाने और पढ़ने की है वे मजदूरी कर रहे हैं। जो दुनिया को खुबसूरत और रहे हैं वो बदबूदार बस्तियों में रह रहे हैं। जिन हाथों ने दूसरों के वातावरण खुशबूदार बना का सौन्दर्य श्रृंगार किया है वह हाथ अपनी दीन-दशा तथा लोगों की हीन मानसिकता के कारण विभिन्न प्रकार के परेशानियों और रोगों से ग्रस्त है।

महज समृद्धि के सौन्दर्य की अभ्यस्त दृष्टि से अलग यह कविता उसके पीछे सक्रिय श्रम की गरिमा का उद्घाटन करती है। कवि के कहने का भाव है वचित, उपेक्षित, निकृष्ट व्यक्ति नहीं बल्कि उसका श्रम मूल्यवान होता है।

17. निम्नलिखित पंक्तियों का अर्थ लिखिए:

"वीर शिवाजी की गाथाएँ
उसको याद जबानी थी।
"बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी"।

उत्तर-प्रस्तुत पद्यांश 'झाँसी की रानी' शीर्षक पाठ से उदधृत है। इस पद्यांश के कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान हैं। प्रस्तुत पद्यांश में कवयित्री 'झाँसी की रानी' के

Class 10 Notes, Model Paper, Objective & Subjective PDF, Question Bank के Mob. 8210423200 पर मैसेज करें

जीवनवृत्त, संघर्ष और विद्रोह से हमारा ओजपूर्ण साक्षात्कार कराती है। आम भारतीयों की जुवान पर वसी यह कविता प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की याद दिलाती है। कवयित्री कहती है कि लक्ष्मीबाई को वीर शिवाजी की कहानियाँ जुवानी याद थी। यह कहानियाँ हमने बुंदेलों के मुँह से सुनी थी। झाँसी की रानी 1857 की स्वाधीनता संग्राम में मर्दो की तरह अंग्रेजों से खूब लड़ी। वह वीरता की प्रतीक थी।

18. 'सुदामा चरित' शीर्षक कविता का केन्द्रीय भाव क्या है? करीब 100-150 शब्दों में उत्तर दें।

उत्तर-सुदामा और कृष्ण बाल सखा थे। सुदामा अति दीन थे। भिक्षा माँगकर भोजन करते थे और हरि भजन में लीन रहते थे। उनकी पत्नी को अपनी दरिद्रता पर बड़ा क्षोभ होता था। उन्होंने दरिद्रता दूर करने के लिए सुदामा को द्वारिकाधीश श्रीकृष्ण के पास जाने को विवश कर दिया।

सुदामा की दीन-दशा देखकर श्रीकृष्ण करुणा से भर गये और उनकीआँखों से आँसू बह चले पानी से भरी परात को छूने की जरूरत नहीं पड़ीकृष्ण ने अपने आँसुओं से सुदामा के पाँव धो डाले।

सुदामा गरीबी की आग में जल तप रहे थे। श्रीकृष्ण सुदामा के बाल सखा थे। द्वारिका से लौटते समय श्रीकृष्ण ने सुदामा को प्रत्यक्ष रूप से कुछ नहीं दिया लेकिन परोक्ष रूप से द्वारिका के समान ही सारे ऐश्वर्यों से सुदामापुरी को युक्त कर दिया।अपने दोन मित्र सुदामा को अपार धन देकर जिस उदारता एवं मित्रभाव का परिचय दिया वह अद्वितीय है।

A A Online Solution

Class 10 Notes, Model Paper, Objective & Subjective PDF, Question Bank के Mob. 8210423200 पर मैसेज करें |